

# सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

९वीं एवेन्यू, आई.पी.एक्स.टेंशन, पटपडगंज, दिल्ली – ११००९२

सत्र:2025-26

कक्षा:-8

विषय: हिंदी पाठ्य पुस्तक

पाठ:15 सच्ची मित्रता

1

“जे न मित्र दुख होहिं दुखारी।

तिन्हहि बिलोकत पातक भारी॥

निज दुख गिरि सम रज करिजाना।

मित्रक दुख रज मेर समाना॥”

भावार्थ:

जो मित्र अपने मित्र के दुख से दुखी नहीं होता, उसे देखना भी पाप के समान है।

सच्चा मित्र अपने बड़े दुख को छोटा और मित्र के छोटे दुख को बहुत बड़ा मानता है।

2

“जिहि के असि मति सहज न आई।

ते सठ कत हठ करत मिताई॥

कुपथ निवारि सुपथ चलावा।

गुन प्रकटे अवगुनन्हि दुरावा॥”

भावार्थ:

जिस व्यक्ति में यह समझ स्वभाव से नहीं होती, वह दुष्ट मित्र कहलाता है।  
सच्चा मित्र गलत रास्ते से रोककर सही रास्ते पर चलाता है,  
मित्र के गुणों को प्रकट करता है और अवगुणों को छिपाता है।

3

“देत लेत मन संक न धरई।  
बल अनुमान सदा हित करई॥  
विपति काल कर सतगुन नेहा।  
श्रुति कह संत मित्र गुन एहा॥”

**भावार्थ:**

इन पंक्तियों द्वारा तुलसीदास जी कहते हैं कि सच्चा मित्र वह है जो अपने मित्र को कुछ देते या उससे कुछ लेते समय अपने मन में किसी प्रकार की दुविधा या शंका नहीं रखता। आवश्यकता पड़ने पर अपने सामर्थ्य के अनुसार सदैव अपने मित्र की सहायता करता है तथा उसके भले के बारे में ही सोचता है। वेदों में लिखा है तथा साधुजन भी कहते हैं कि सच्चे मित्र के गुणों की पहचान विपत्ति के समय ही होती है। जो विपत्ति में साथ दे, उसमें ही सच्चे मित्र के गुण होते हैं।

4

“आगे कह मृदु बचन बनाई।  
पाछे अनहित मन कुटिलाई॥  
जाकर चित अहि गति समभाई।  
अस कुमित्र परिहरेहिं भलाई॥”

**भावार्थ:**

तुलसीदास जी कहते हैं कि ऐसे मित्र जो तुम्हारे सम्मुख मधुर बने, तुमसे प्रेम दिखाएँ परंतु तुम्हारे पीठ पीछे तुम्हारी निंदा करें, तुम्हारा बुरा चाहें। ऐसे कुटिल विचार रखने वाले कभी मित्र नहीं हो सकते इसलिए ऐसे कुमित्रों का साथ तुरंत छोड़ देने में ही भलाई है।

## 5.

सेवक सठ, नृप कृपन, कुमारी।  
कपटि मित्र सूल सम चारी॥  
सखा सोच त्यागहु बल मोरे।  
सब विधि घटब काज में तेरे॥

**भावार्थ:**

इन पंक्तियों में तुलसीदास जी कहते हैं कि मूर्ख सेवक, कंजूस राजा, दुश्चरित्र स्त्री तथा कपटी मित्र ये चारों जीवन में काँटों के समान होते हैं इसलिए जीवन में मित्र बनाते समय बहुत सोच-विचार करना चाहिए। सुग्रीव कह रहे हैं. हे! प्रभु राम! “आप मुझे अपने सखा के रूप में स्वीकार कर लें।”

### **मौखिक कौशल**

1. इस पाठ में सच्चे मित्र के बारे में वर्णन किया गया है।
2. जो व्यक्ति मित्र का दुख देखने पर भी दुखी नहीं होता है, वह भारी पाप करता दिखाई पड़ता है।
3. कपटी मित्र काँटे के समान होता है।

### **लिखित कौशल**

1. (क) मित्र की छोटी-से-छोटी विपत्ति को भी पहाड़ के समान समझने वाला व्यक्ति सच्चा मित्र होता है।

(ख) सच्चा मित्र हमारे गुणों के बारे में सबको बताता है तथा हमारे अवगुण दूर करता है।

(ग) विपत्ति के समय सच्चा मित्र हमारा साथ देता है।

2. इन पंक्तियों का भावार्थ यह है कि मूर्ख सेवक, कंजूस राजा, दुश्चरित्र नारी और कपटी मित्र, ये चारों काँटे के समान दुखदाई होते हैं। इनसे हमेशा दूर ही रहना चाहिए।

### **मूल्यपरक प्रश्न**

किसी के दुख में शामिल होकर, किसी की सहायता करके, किसी को बुराई के रास्ते से हटाकर अच्छाई के रास्ते पर ले जाकर तथा किसी के गुणों की प्रशंसा करके कोई व्यक्ति किसी दूसरे का सच्चा मित्र बन सकता है।